आज की मुरली का सार ------ Date: 26-05-2014

बाबा कहते हैं ग्रहस्थ व्यवहार में रहते हुए ऐसा ट्रस्टी बनो जो किसी भी चीज में आसक्ति न रहे, हमारा कुछ भी नहीं, ऐसा बेगर बन जाओ.

हम जानते हैं की बाबा आये हैं हम सब पतित आत्माओं को पावन बनाये अपने घर वापस ले जाने और फिर पावन दुनिया का मालिक बनाने. हमने लास्ट 63 जन्म जो भी कर्म किया इस विनाशी शरीर के भान में रह कर सब शरीर के सुख के लिए किया. अब ये एक जन्म मुझे आत्मा के भान में रह कर आत्मा के कल्याण के लिए ही हर कर्म करना हैं. अगर ये ज्ञान रहें तो मेरे सब कर्म, श्रेष्ठ कर्म ही होंगे.

इस कलयुगी दुनिया में रहते आत्मा का कल्याण करने के लिए मुझे साक्षी हो कर ड्रामा के हर सीन को देखना हैं, निमित बन कर सर्व की सेवा करनी हैं और ट्रस्टी हो कर घरसंसार चलाना हैं.

आज सारी मुरली में, बाबा ने हमें समझाया की ट्रस्टी हो कर इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन कैसे जीया जाता हैं. बाबा कहते हैं ट्रस्टी माना संपूर्ण बेगर.

में आत्मा ट्रस्टी हूं, इस शरीर को चलाने की. अब तक मेरे पास जो भी साधन, सम्पति या सम्बन्ध हैं इस शरीर के सुख के लिए युज किया. लेकिन अब मुझ आत्मा को इस शरीर, साधन या सम्पति को युज करते भी इसमें कोई भी आसक्ति नहीं रखनी हैं.

अब मुझे, मेरा हर कर्तव्य ट्रस्टी हो कर निभाना हैं. किसी भी बात में मेरा-पन न आए. याद रहे बाबा ने मुझे ट्रस्टी बनाया हैं तो मुझे हर कर्तव्य निभाते हुए ट्रस्टी भाव रखना ही हैं.

आज का स्वमान हैं. में आत्मा ट्रस्टी हूं.

ॐ शांति.